आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-27,अंक-1 जनवरी 2013

इस अंक में

- राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे स्थित माइक्रोबियल कंटेनमेंट कॉम्पलेक्स में BSL-4 (जैव संरक्षा प्रयोगशाला-4) राष्ट्र को समर्पित 1
- *''इंफैंट ऐण्ड चाइल्ड मॉर्टेलिटी इन इंडिया : लेवेल्स, ट्रेण्ड्स ऐण्ड डिटर्मिनैंट्स''* शीर्षक से रिपोर्ट का विमोचन 4
- 100वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के दौरान आयोजित प्राइड ऑफ इंडिया फ्रन्टियर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मेगा एक्स्पो में आई सी एम आर की भागीदारी 5
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 6
- परिषद की वित्तीय सहायता से संपन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन 7

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच
सचिव, भारत सरकार
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं
महानिदेशक
भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

सदस्य — डॉ बेला शाह

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय
डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे स्थित माइक्रोबियल कंटेनमेंट कॉम्पलेक्स में BSL-4 (जैव संरक्षा प्रयोगशाला-4) राष्ट्र को समर्पित

हालांकि, विषाणुओं से पैदा होने वाले रोग मानव इतिहास जितने पुराने हैं, हमेशा वर्तमान की घटनाएं हमारी सोच को ज्यादा प्रभावित करती हैं। वर्ष 2000 से भारत को विभिन्न भागों में अत्यंत रोगजनक विषाणुओं के कई गंभीर प्रकोपों का सामना करना पड़ा है। वर्ष 2001 में पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में निपाह विषाणु का एक प्रकोप हुआ जिसमें मानव मामलों के प्रकाश में आने के साथ मौतों की पुष्टि हुई। वर्ष 2006 में एवियन इंफ्लुएंज़ा एक राष्ट्रीय संकट के रूप में उभर कर आया। उसके पश्चात वर्ष 2007 में पश्चिम बंगाल के नाडिया में हुए एक अन्य प्रकोप में अनेक मौतें हुईं। तत्पश्चात प्रत्येक वर्ष अनेक प्रकोप घटित हुए। हाल ही (वर्ष 2010-11) में गुजरात में क्रीमियम कांगो रक्तस्रावी ज्वर की घटना भी एक राष्ट्रीय संकट के रूप में घटी। राष्ट्रीय संकट की प्रत्येक स्थिति में यह अनुभव किया गया कि हमारा देश अपने प्रमुख संस्थानों में प्रशिक्षित स्टाफ, इंफ्रास्ट्रक्चर और प्रयोगशाला के जैवसुरक्षा स्तर के संदर्भ में स्वास्थ्य की आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए पूर्ण सुसज्जित नहीं है। यह भी देखा गया कि जैवआतंकवाद के एक कारक के रूप में सम्मिलित रोगजनों में काफी बड़ा हिस्सा विषाणुओं का ही है।

राष्ट्र को बी एस एल 4 प्रयोगशाला समर्पित करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आज़ाद, साथ में बायें से दायें डॉ ए.सी. मिश्रा, निदेशक, एन आई वी; डॉ टी. रामासामी, सचिव, डी एस टी; डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर; श्री पतंगराव कदम, वन मंत्री, महाराष्ट्र सरकार; और ले.ज. (डॉ) जे.के. बंसल

इसलिए भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) द्वारा एक विस्तृत हाई कंटेनमेंट फैसिलिटी (BSL-3 प्लस प्रयोगशालाओं और सहायक BSL-2 प्रयोगशालाओं) को स्थापित करने की तत्काल आवश्यकता का अनुभव किया गया। वर्ष 2000-2004 के बीच एक व्यापक सुविधा विकसित की गई जिसे फरवरी 2005 में तत्कालीन सम्माननीय राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने राष्ट्र को समर्पित किया । उसके पश्चात, अत्यन्त रोगजनक विषाणुओं के रख-रखाव की क्षमता को और विकसित करने के उद्देश्य से विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग में आई सी एम आर ने अपने पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के एक विस्तार के रूप में आई सी एम आर के पुणे स्थित *माइक्रोबियल कंटेनमेंट कॉम्पलेक्स* (एम सी सी) में अति विशिष्ट *मैक्ज़िमम कंटेनमेंट लेबोरेटरी (बायोसेफ्टी लेवेल 4)* के विकसित करने की योजना तैयार की । इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन, जेनेवा और सी डी सी, अटलांटा के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य दिशानिर्देशों के आधार पर एक चार एकड़ की भूमि में स्थापित करने की योजना तैयार की गई । अत्यन्त विस्तृत और नितांत सावधानीपूर्वक नियोजन के पश्चात वर्ष 2007 में इस व्यापक मैक्ज़िमम कंटेनमेंट, BSL-4 सुविधा के कार्य की शुरुआत की गई । इस सुविधा के विकास के लिए आवश्यक वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करने में आई सी एम आर के साथ विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग (DST) माध्यम रहा है ।

आई सी एम आर ने इस अत्यन्त महत्वपूर्ण सुविधा की प्रगति पर निरन्तर निगरानी रखने के लिए एक कुशल विशेषज्ञ समिति गठित की थी । इस समिति की अध्यक्षता अवकाश प्राप्त DG AFMS ले.ज. डॉ डी. रघुनाथ ने की और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव इस समिति के संरक्षक थे । अन्य सदस्यों में आई सी एम आर एवं डी एस टी के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक एवं अधिकारीगण सम्मिलित थे । इस सुविधा की प्रगति की निगरानी करने के लिए प्रत्येक 3-4 माह की अवधि में इस समिति की बैठक सम्पन्न हुई । जून 2012 में एम सी सी, पुणे में अंतिम समीक्षा बैठक हुई जिसमें सभी सदस्यों ने इस BSL-4 सुविधा को पूर्णतया उपयुक्त पाया । इस समिति ने व्यक्त किया कि इस सुविधा को कार्यात्मक बनाने के लिए सम्पूर्ण भवन, आवश्यक सभी उपकरण, और प्रणालियां पूर्णतया उपलब्ध हैं ।

बी एस एल 4 प्रयोगशाला का शुभारम्भ करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आज़ाद साथ में महाराष्ट्र के वन मंत्री श्री पतंगराव कदम एवं अन्य अतिथिगण

इस सुविधा का निर्माण कार्य लगभग 65 करोड़ के बजट के साथ मार्च 2012 में पूर्ण कर लिया गया, यह लागत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार की प्रयोगशालाओं के निर्माण पर होने वाले व्यय से काफी कम है। यह पूर्ण एशिया क्षेत्र में इस प्रकार की एक मात्र सुविधा है और इससे भारत विश्व के कुछ चुने हुए विकसित देशों की श्रेणी में आ गया है । दिनांक 28 दिसम्बर, 2012 को आयोजित एक भव्य समारोह में केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आज़ाद ने इस आधुनिकतम प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए इसे राष्ट्र को समर्पित किया ।

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आज़ाद साथ में बायें से दायें डॉ ए. सी. मिश्रा, निदेशक, एन आई वी; श्री पतंगराव कदम, वन मंत्री, महाराष्ट्र सरकार; मे. ज. (डॉ) जे. के. बंसल; और डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर

इस अवसर पर माननीय श्री आज़ाद ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की स्थापना के साथ ही अनेक उपलब्धियां हुई हैं जिनका श्रेय स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत हमारे वैज्ञानिकों को जाता है तथा यह प्रयोगशाला उनकी कार्य क्षमताओं का एक उत्कृष्ट उदाहरण है । माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग ने देश को निराश नहीं किया है, चाहे वह इंफ्लुएंजा-ए (H1N1) के लिए घरेलू अभिकर्मकों (रिएजेंट्स) अथवा घरेलू वैक्सीन के विकास को सुगम बनाना, एक वर्ष के भीतर प्रयोगशालाओं की संख्या में काफी वृद्धि करना हो अथवा नई चुनौतियों पर शोध कार्य करना है । उदाहरण के तौर पर जन स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण संभावित क्षेत्रों के विकास एवं उनके मूल्यांकन हेतु 75 प्रमुख क्षेत्रों की पहचान कर ली गई है, जिनमें सम्मिलित हैं - कालाज़ार की चिकित्सा हेतु नवीन विधान, मलेरिया की चिकित्सा हेतु नवीन औषध संयोजन, डेंगी, चिकनगुनिया, क्षयरोग (टी बी), कई अन्य संक्रमणों एवं कैंसर के निदान हेतु नवीन परीक्षण, एक कॉलरा वैक्सीन, तथा मधुमेह के लिए एक सस्ती परीक्षण स्ट्रिप । देश में विषाणुज (वाइरस) रोगों और टी बी पर शोध कार्य करने के लिए आई सी एम आर ने 16 नई प्रयोगशालाएं स्थापित की हैं जिनमें 14 BSL-II और 2 BSL-II श्रेणी की प्रयोगशालाएं हैं । आई सी एम आर के पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान (एन आई वी) द्वारा विषाणुओं सहित संक्रामक रोगों के शोध और प्रबंधन पर बहुत कार्य किए गए हैं । इस संस्थान द्वारा मच्छरों, टिक्स (किलनी) और माइट्स (कुटकी) जैसे रोगवाहकों द्वारा

संचारित विषाणुओं पर उत्कृष्ट शोध कार्य जारी हैं । इस संस्थान ने हाल के वर्षों में यकृतशोथ, इंफ्लुएंज़ा और तीव्र मस्तिष्कशोथ संलक्षण (ए ई एस) के लिए जिम्मेदार कई अन्य विषाणुओं पर प्रशंसनीय कार्यों के माध्यम से अपनी प्रतिष्ठा स्थापित की है ।

बी एस एल 4 प्रयोगशाला में प्रवेश करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आज़ाद

श्री आज़ाद ने कहा कि BSL-IV प्रयोगशाला के उद्घाटन समारोह के साथ एन आई वी, पुणे के हीरक जयन्ती समारोहों का समापन होता है । BSL-IV इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से इस संस्थान की क्षमता में वृद्धि से न केवल भारत बल्कि इस क्षेत्र के अन्य देशों को पर्याप्त सहायता मिलेगी । विभिन्न प्रकोपों और विभिन्न विषाणुज रोगों विशेषतया H1N1 विश्वमारी के दौरान राज्य और केन्द्र सरकार की एजेंसियों को सहायता प्रदान करने में राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के योगदानों से सभी परिचित हैं । राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले रोगों जैसे कि इंफ्लुएंज़ा A (H1N1) विश्वमारी के अलावा SARS और एवियन इंफ्लुएंज़ा पर अध्ययन में इस संस्थान की एक अग्रणी भूमिका रही है । सरकार के अन्य संस्थानों की भागीदारी में NIV के वैज्ञानिकों ने देश के विभिन्न भागों में रोगों पर खोजी अध्ययनों में सराहनीय कार्य किया है । अपने शोध कार्य और देश को प्रदान की गई अपनी सेवाओं के माध्यम से NIV ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है उसके आधार पर देश भर में NIV यूनिट्स के और सृजन की आवश्यकता है ।

संबोधित करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आज़ाद

अंत में श्री आज़ाद ने स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, आई सी एम आर तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के वैज्ञानिकों, चिकित्सकों एवं अधिकारियों, राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक एवं वैज्ञानिकों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं, इस सुविधा के निर्माण से संबद्ध कम्पनी HSCC तथा इस प्रयोगशाला के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अन्य सभी व्यक्तियों के योगदान को सराहा एवं शुभकामनाएं दीं ।

संबोधित करते हुए डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर

BSL-IV सुविधा के उद्घाटन समारोह के अवसर पर महाराष्ट्र सरकार के वन मंत्री श्री पतंगराव कदम; डी एस टी, भारत सरकार के सचिव डॉ टी.रामासामी; स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच; राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य मेजर जनरल (डॉ) जे.के.बंसल; आई सी एम आर के पूर्व महानिदेशक डॉ एस.पी. त्रिपाठी; आई सी एम आर के संस्थानों के आधा दर्जन से ज्यादा

बी एस एल 4 प्रयोगशाला के उद्घाटन समारोह के अवसर पर पौधारोपण करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री माननीय श्री गुलाम नबी आज़ाद

निदेशकों; अवकाश प्राप्त डी जी ए एफ एम एस ले. ज. डॉ डी. रघुनाथ; एच एस सी सी के प्रमुख प्रबंधन-निदेशक श्री ग्यानेश पाण्डेय; राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ ए.सी.मिश्रा एवं अनेक गणमान्य अतिथियों, वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों की उपस्थिति रही ।

''इंफैंट ऐण्ड चाइल्ड मॉर्टेलिटी इन इंडिया : लेवेल्स, ट्रेण्ड्स ऐण्ड डिटर्मिनैंट्स'' शीर्षक से रिपोर्ट का विमोचन

बाल दिवस के अवसर पर दिनांक 14 नवम्बर, 2012 को नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) में जैवप्रौद्योगिकी विभाग के सचिव डॉ एम.के.भान द्वारा *''इंफैंट ऐण्ड चाइल्ड मॉर्टेलिटी इन इंडिया : ट्रेण्ड्स ऐण्ड डिटर्मिनैंट्स''* नामक रिपोर्ट लांच की गई । सभा की अध्यक्षता स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने की । इस सभा में भारत में यूनिसेफ के प्रतिनिधि श्री लूइस जॉर्ज आर्सनॉल्ट तथा अनेक अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही । इस अवसर पर डॉ भान ने अपने सम्बोधन में बल दिया कि शिशु मर्त्यता में तीव्र गिरावट के लिए लड़कियों को शिक्षित करने और प्रसवकालीन सुरक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने की आवश्यकता है ।

बायें से दायें डॉ अरविंद पाण्डेय, निदेशक, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान; डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग; श्री लूइस जॉर्ज आर्सनॉल्ट, यूनिसेफ के प्रतिनिधि; एवं डॉ एम. के. भान, सचिव, जैवप्रौद्योगिकी विभाग

डॉ कटोच ने व्यक्त किया कि शिशु की उत्तरजीविता को बढ़ाने के लिए शिशु मर्त्यता को कम करने की दिशा में नवीन प्रयासों की आवश्यकता है जो रोग-कार्यक्रम और क्षेत्र-विशिष्ट प्रयासों से परे है । उन्होंने यह इंगित किया कि इस रिपोर्ट की उपलब्धियों की विवेचना की जानी चाहिए, इसमें यथार्थवादी सिफ़ारिशें प्रस्तुत हैं । उन्होंने इस अध्ययन को प्रायोजित करने हेतु नई दिल्ली स्थित *यूनिसेफ इंडिया कंट्री ऑफिस* को धन्यवाद दिया । यूनिसेफ के डॉ पवित्र मोहन ने इस अध्ययन के उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन किया ।

आई सी एम आर परिसर में स्थित राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान के निदेशक डॉ अरविन्द पाण्डेय ने सैम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम से प्राप्त आंकड़ों के टाइम-सिरीज विश्लेषण (1978-2010) तथा वर्ष 1992-93, 1998-99 और 2005-06 वर्षों में तीन चक्रों में सम्पन्न राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षणों में अपनाई गई विधियों की जानकारी दी । उन्होंने बताया कि केरल, तमिल नाडु, महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और पश्चिम बंगाल नामक 6 राज्यों द्वारा सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य -4 (एम डी जी-4) अर्थात् वर्ष 2015 तक पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मर्त्यता दर 39 से कम करने का लक्ष्य संभवतः प्राप्त कर लिया जाएगा ।

इस अवसर पर श्री आर्सनॉल्ट ने व्यक्त किया कि स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता में बराबरी को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने पर केन्द्रित नवीकृत प्रयास वर्ष 2015 तक भारत में शिशु उत्तरजीविता को बढ़ाने की दिशा में की जा रही कार्यवाहियों को दिशा देने में सहायक होंगे । हमें एक ऐसे बृहत प्रयास अपनाने की आवश्यकता है जिसमें न केवल शिशु उत्तरजीविता से जुड़े प्रमुख इंटरवेंशन कार्यक्रमों को बढ़ाना सम्मिलित है बल्कि प्रसवकालीन सुरक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाना, लड़कियों की शिक्षा को प्राइमरी के बाद बढ़ावा देना, विवाह और शिशु जन्म की आयु को विलम्बित करना और दो प्रसवों के बीच पर्याप्त अन्तर सुनिश्चित करना भी सम्मिलित है ।

पर्यावरणी निर्धारकों के संदर्भ में इस अध्ययन से संकेत मिले हैं कि ऐसे परिवारों के बच्चों को मौत का शिकार बनने का उच्च खतरा होता है जिनमें सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता नहीं है । जिन घरों में फ्लश अथवा पिट शौचघर की व्यवस्था नहीं है वहां भी नवजात शिशुओं और बच्चों की मर्त्यता दर काफी अधिक है।

डॉ पाण्डेय के अनुसार इस अध्ययन के परिणामों में एम डी जी-4(MDG-4) को प्राप्त करने के लिए केवल प्रत्यक्ष कारणों को ही दूर करने तक ही सीमित न रखते हुए शिशु मर्त्यता के लिए जिम्मेदार व्यापक निर्धारकों को दूर करने की आवश्यकता रेखांकित होती है।

पूरी रिपोर्ट http : //www.unicef.org/india/Report.pdf पर उपलब्ध है ।

श्री बाल किशन गुलाटी, वैज्ञानिक 'बी', राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्थान, नई दिल्ली

100वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के दौरान आयोजित प्राइड ऑफ इंडिया फ्रन्टियर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मेगा एक्स्पो में आई सी एम आर की भागीदारी

दिनांक 3-7 जनवरी, 2013 को कोलकाता में आयोजित 100वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के दौरान सम्पन्न प्राइड ऑफ इंडिया फ्रन्टियर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मेगा एक्स्पो में आई सी एम आर द्वारा एक विशाल प्रदर्शनी आयोजित की गयी । प्रदर्शनी में आई सी एम आर एवं इसके संस्थानों में सम्पन्न अनुसंधान गतिविधियों एवं प्रमुख उपलब्धियों को कुल 150 आकर्षक एवं सूचनाप्रद पोस्टरों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया । इन पोस्टरों में आई सी एम आर के 20 से अधिक संस्थानों एवं आई सी एम आर मुख्यालय के प्रमुख चुने गए विषयों जिसमें पोषण, पर्यावरणी एवं

कोलकाता में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के 100वें सत्र के अवसर पर आई सी एम आर द्वारा आयोजित प्रदर्शनी को अवलोकन करते हुए डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर

व्यावसायिक स्वास्थ्य, मलेरिया, हैज़ा तथा आंत्ररोग, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, कुष्ठ रोग, क्षयरोग, आनुवंशिक विकार, क्षेत्रीय स्वास्थ्य समस्याओं एवं बौद्धिक सम्पदा अधिकार आदि शामिल थे, पर महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई गई । आई सी एम आर की महत्वपूर्ण गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर तैयार अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा में बनी वीडियो फिल्में भी प्रतिदिन प्रदर्शित की गईं । प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में स्थानिक स्कूलों/कॉलेजों से आए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं के अलावा अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए । आई सी एम आर के महानिदेशक एवं सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, डॉ विश्व मोहन कटोच ने दिनांक 3 जनवरी, 2013 को आई सी एम आर के स्टाल का भ्रमण किया तथा उपस्थित लोगों का उत्साहवर्धन किया । इस अवसर पर आई सी एम आर के प्रकाशनों को प्रदर्शित करने के साथ-साथ उनका विक्रय भी किया गया ।

कोलकाता में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस के 100वें सत्र के अवसर पर आई सी एम आर द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए दर्शकगण

विज्ञान कांग्रेस के दौरान दिनांक 5 जनवरी, 2013 को आई सी एम आर के कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान पर एक 'पब्लिक आउटरीच सेशन' का भी आयोजन किया गया । इसके अंतर्गत संस्थान के प्रभारी-निदेशक डॉ शेखर चक्रबर्ती ने संस्थान द्वारा सम्पन्न शोध गतिविधियों विशेषकर हैजा तथा आंत्ररोग सम्बद्ध रोगों, अस्वच्छ निवास स्थितियों तथा जलवायु परिवर्तन के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले पहलुओं पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की । अहमदाबाद स्थित राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान के निदेशक डॉ पी.के. नाग ने पर्यावरणी एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य जिसमें जल, वायु एवं पर्यावरण प्रदूषण तथा जीवन शैली सम्बद्ध पहलू शामिल थे, पर सूचना प्रदान की । परिषद मुख्यालय के प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के प्रमुख डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव ने आई सी एम आर एवं इसके संस्थानों द्वारा किए जा रहे सूचना, शिक्षण एवं संचार कार्यक्रमों पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई । आई सी एम आर के हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान के वैज्ञानिक 'ई' डॉ डी. रघुनाथ राव द्वारा पोषण सम्बद्ध पहलुओं विशेषकर फलों एवं हरी पत्तेदार सब्जियों के सेवन पर विशेष बल देते हुए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई । व्याख्यान के पश्चात उपस्थित लोगों को ''*रेजिंग दि बार*'' शीर्षक से एक लघु ऑडियो-विज़ुअल फिल्म भी दिखाई गई । इस कार्यक्रम में स्थानिक स्कूल के बच्चे एवं समाज के अन्य लोगों के अतिरिक्त शोधकर्ता, संस्थान के वैज्ञानिकगण, आदि उपस्थित हुए । आई सी एम आर मुख्यालय के वैज्ञानिक 'डी' डॉ रजनीकांत ने इस कार्यक्रम का समन्वयन किया ।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

गणतंत्र दिवस के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय में ध्वजारोहण

भारत के 64वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आई सी एम आर मुख्यालय के प्रांगण में ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, भारत सरकार के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने गणतंत्र दिवस के सम्मान में राष्ट्र ध्वज का आरोहण किया। इस अवसर पर डॉ कटोच ने आई सी एम आर के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं स्टाफ को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने देश में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से निपटने की दिशा में आई सी एम आर के वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे देश में अपने शोध कार्यक्रमों में ऐसे विषयों को वरीयता दें जो देश में जन स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने की दिशा में सीधे उपयोगी हों। डॉ कटोच ने सामाजिक-व्यावहारिक पहलुओं पर शोध कार्यों को बढ़ाने पर बल दिया जिससे समाज में व्याप्त स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने की दिशा में कारगर योगदान दिया जा सके।

अंत में, उन्होंने सभी को पुनः शुभकामनाएं देते हुए निष्ठापूर्वक कार्य करने का आह्वान किया।

ध्वजारोहण के उपरान्त सम्बोधित करते हुए डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में संपन्न बैठकें

पंजाब राज्य में मानसिक स्वास्थ्य पर मादक द्रव्य व्यसन के प्रभाव पर विशेषज्ञ दल की बैठक	4 दिसम्बर, 2012
जन्म के समय श्वासावरोध पर कॉनसेप्ट प्रोपोज़ल हेतु जांच समिति की बैठक	5 दिसम्बर, 2012
एम सी सी, पुणे स्थित BSL-4 सुविधा की उच्च स्तरीय समिति की बैठक	10 दिसम्बर, 2012
स्वास्थ्य मंत्रालय की जांच समिति की बैठक	10 दिसम्बर, 2012
दिल्ली, चण्डीगढ़ और पंजाब में थैलासीमिया नियंत्रण पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स अध्ययन की बैठक (NTF-Thal)	11 दिसम्बर, 2012
लाइसोसोमल स्टोरेज विकार पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स अध्ययन की बैठक (NFT-LSD)	11 दिसम्बर, 2012
जन्मजात हाइपोथायरॉडिज्म एवं जन्मजात एड्रीनल हाइपरप्लाज़िया हेतु नवजात की जांच पर राष्ट्रीय टास्क फोर्स अध्ययन की बैठक	11 दिसम्बर, 2012
INCLAP टास्क फोर्स पर प्रस्तावों की जांच हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	11 दिसम्बर, 2012
राष्ट्रीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, भोपाल की प्रयोगशालाओं के नियोजन पर बैठक	13 दिसम्बर, 2012
उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में रिकेटसियल रोगों पर टास्क फोर्स दल की बैठक	13 दिसम्बर, 2012
गुजरात में आपदा (भूकम्प) प्रभावित आबादी में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की आवश्यकताओं और सेवा वितरण मॉडेलों पर बैठक	14 दिसम्बर, 2012
जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान बोर्ड की बैठक	14 दिसम्बर, 2012
नेत्ररोग विज्ञान के क्षेत्र में परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	17 दिसम्बर, 2012
स्टेम सेल शोध और चिकित्सा हेतु राष्ट्रीय शीर्ष समिति की 5वीं बैठक	17 दिसम्बर, 2012
नैनोमेडिसिन पर टास्क फोर्स की बैठक	18 दिसम्बर, 2012
सगर्भता सहित माताओं में सप्ताह के विरुद्ध दैनिक रूप में मुखीय लौह सम्पूरण के दौरान ऑक्सीकर दबाव के आमापन पर आई सी एम आर टास्क फोर्स अध्ययन की बैठक	18 दिसम्बर, 2012

अस्थि के संदर्भ में एक पारम्परिक चिकित्सक द्वारा प्रयुक्त 4 हर्ब्स और उनके उत्पाद का जन्तु में खोजी अध्ययन की बैठक	19 दिसम्बर, 2012
चिकित्सीय परीक्षणों पर बैठक	19 दिसम्बर, 2012
टाइप 2 मधुमेह, रुमेटी संधिशोथ एवं मिरगी की चिकित्सा में चयनित हर्ब्स और एलोपैथिक औषधियों की पारस्परिक क्रिया पर अध्ययनों की विशेषज्ञ दल की बैठक	21 दिसम्बर, 2012
LCH IV परीक्षण को अंतिम रूप देने हेतु लैंगरहैंस सेल हिस्टोसाइटोसिस परीक्षण	24 दिसम्बर, 2012
ऑन लाइन एक्स्ट्राम्युरल प्री.प्रपोज़ल पर जांच समिति की बैठक	28 दिसम्बर, 2012
12वीं योजना हेतु आई सी एम आर की जारी गतिविधियों के मूल्यांकन हेतु उच्च अधिकार प्राप्त समिति की बैठक	29 दिसम्बर, 2012
राष्ट्रीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान, भोपाल के अंतर्गत जानपदिक रोगविज्ञानी अनुसंधान के अंतर्गत इंट्राम्युरल एवं एक्स्ट्राम्युरल शोध परियोजनाओं की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ दल की बैठक	3 जनवरी, 2013
आई सी एम आर के संस्थानों में वैज्ञानिक उपकरणों को प्राप्त करने हेतु तकनीकी समिति की बैठक	3 एवं 7 जनवरी, 2013
रीकॉम्बीनैंट hcg-LTB वैक्सीन के साथ प्री-क्लीनिकल विषाक्तता अध्ययनों हेतु प्रस्तावों की समीक्षा हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	8 जनवरी, 2013
बक्कल म्युकोसा पर उपसमिति की बैठक	8 जनवरी, 2013
औषधीय पादपों पर वैज्ञानिक सलाहकार दल की बैठक	8 जनवरी, 2013
विभिन्न संबद्ध लौजिस्टिक पहलुओं हेतु फर्मों के साथ चर्चा हेतु विशेषज्ञ समिति की बैठक	10 जनवरी, 2013
खेसारी दाल से संबद्ध पहलुओं पर चर्चा हेतु स्टेकहोल्डर्स की द्वितीय बैठक	10 जनवरी, 2013
मानव प्रजनन अनुसंधान केन्द्रों (HRRCs) पर शीर्ष समिति की बैठक	11 जनवरी, 2013
HRRCs द्वारा प्रस्तुत शोध प्रस्तावों की समीक्षा हेतु परियोजना पुनरीक्षण दल की बैठक	11 जनवरी, 2013
सैन्य टुकड़ियों का पोषण और संतोषजनक स्तर पर बैठक	11 जनवरी, 2013
जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान फोरम (ट्राइबल हेल्थ रिसर्च फोरम) की बैठक	12 जनवरी, 2013
12वीं योजना हेतु आई सी एम आर की गतिविधियों पर उच्च अधिकार प्राप्त समिति की बैठक	12 जनवरी, 2013

परिषद की वित्तीय सहायता से संपन्न एवं भावी संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
तंत्रिकाविकासात्मक विधियों के माध्यम से मस्तिष्क पाल्सी ग्रस्त बच्चों के न्युरोमोटर एवं वाक् प्रबंधन पर कार्यशाला	4–5 जनवरी, 2013 बंगलोर	**डॉ एम. जयराम** विभागाध्यक्ष वाक् विकृतिविज्ञान एवं श्रवणविज्ञान विभाग राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तांत्रिकाविज्ञान विभाग बंगलोर
भारतीय भैषजिक संस्था का 45वां राष्ट्रीय सम्मेलन तथा सुरक्षित एवं प्रभावी चिकित्सा की दिशा में भेषजगुणविज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	4–7 जनवरी, 2013 नागपुर	**प्रो. सी. टी. चोपड़े** आयोजन सचिव श्रीमती किहोरी ताई भोयार कॉलेज ऑफ फार्मेसी नागपुर
एथिक्स में उभरते पहलुओं और मेडिकल रिसर्च के नियमन पर सम्मेलन	12 जनवरी, 2013 पुणे	**डॉ वीना जोशी** सहायक निदेशक दीना नाथ मंगेशकर अस्पताल एवं शोध केन्द्र पुणे
बायोफिजिक्स, जैवप्रौद्योगिकी और बायोइंफॉर्मेटिक्स के अग्रणी क्षेत्रों पर राष्ट्रीय सम्मेलन	13–16 जनवरी, 2013 मुम्बई	**डॉ पी. एम. डोगरे** विभागाध्यक्ष बायोफिजिक्स विभाग मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई

संगोष्ठियां / सेमिनार / कार्यशालाएं / पाठ्यक्रम / सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
तंत्रिका ह्रासी और तंत्रिका विकासात्मक विकारों: ट्रांसलेशन पहलुओं पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	13–17 जनवरी, 2013 कोलकाता	**प्रो. शशांक चक्रवर्ती** विभागाध्यक्ष जीव रसायन विभाग स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान कोलकाता
प्वाइंट ऑफ केयर (POC) स्वास्थ्य सुरक्षा प्रौद्योगिकियों पर IEEE-EMBS विशेष विषय पर सम्मेलन	16-18 जनवरी, 2013 बंगलोर	**प्रो.पी.के.दत्ता** विभागाध्यक्ष, मेडिकल साइंस एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर
क्योरिंग दि इनक्योरएबल्स : नवाचारों के आदान-प्रदान पर 10वां नॉलेज मिलेनियम सम्मेलन	16 जनवरी, 2013 नई दिल्ली	**श्री डी.एस.रावत** महासचिव दि एसोसिएटेड चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स ऐण्ड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया नई दिल्ली
तंत्रिका प्रोस्थेसिस की दिशा में मस्तिष्क संकेत के अर्जन, विश्लेषण और प्रयोग पर सेमिनार	18-19 जनवरी, 2013 कोइम्बटूर	**डॉ हेमा सी.आर** डीन करपगम विश्वविद्यालय कोइम्बटूर
आण्विक प्रतिरक्षाविज्ञान में नवीन प्रगति	18-19 जनवरी, 2013 लखनऊ	**डॉ कल्पना सिंह** व्याख्याता जीवरसायन विभाग किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ
निरमा फार्मेसी संस्थापक– अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2013	18–20 जनवरी, 2013 अहमदाबाद	**प्रो. अनुराधा के गज्जर** एकेडमिक समन्वयक फार्मेसी संस्थान अहमदाबाद
शिशु अधिकारों की सुरक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	18–20 जनवरी, 2013 पुडुचेरी	**प्रो. सिबनाथ देब** विभागाध्यक्ष एप्लाइड मनोविज्ञान विभाग पुडुचेरी विश्वविद्यालय पुडुचेरी
मधुमेह और उसकी जटिलताओं पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	18–19 जनवरी, 2013 कोइम्बटूर	**डॉ अदिति बुक** सहायक आचार्य चरोतर विज्ञान एवं प्रौद्योगीकी विश्वविद्यालय आनन्द

तकनीकी सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87